ग० लार्वोश्चिकोव

तट से तट तक

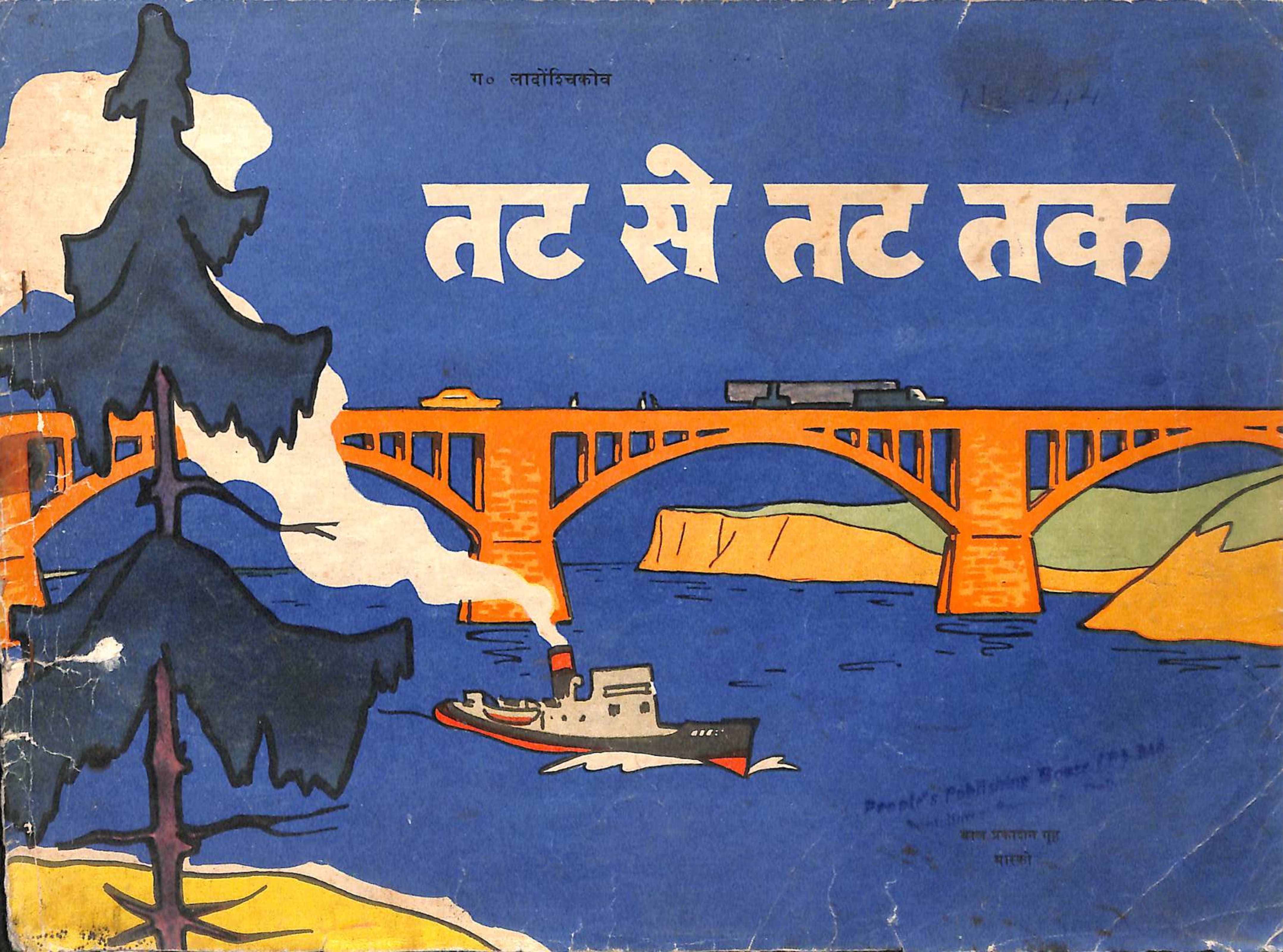

People's Publishing House

बाल प्रकाशन गृह
मास्को

ले रंग-तूलिका बैठा
सोचा, कुछ चित्र बनाऊं।
गढ़ कर इक नई कहानी
कापी पर उसे सजाऊं।।

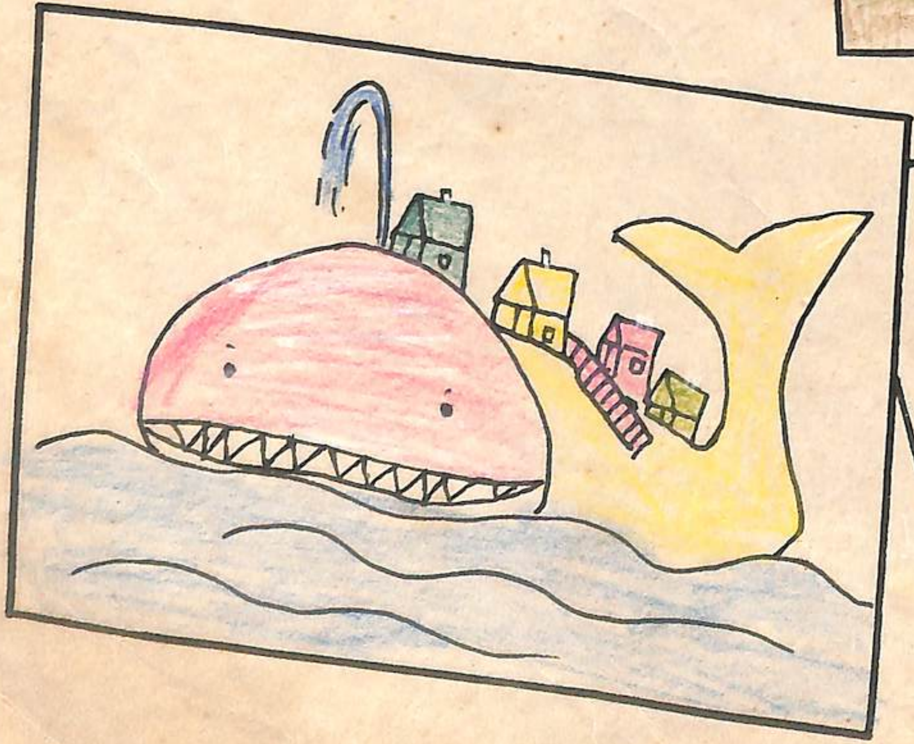

No - 4

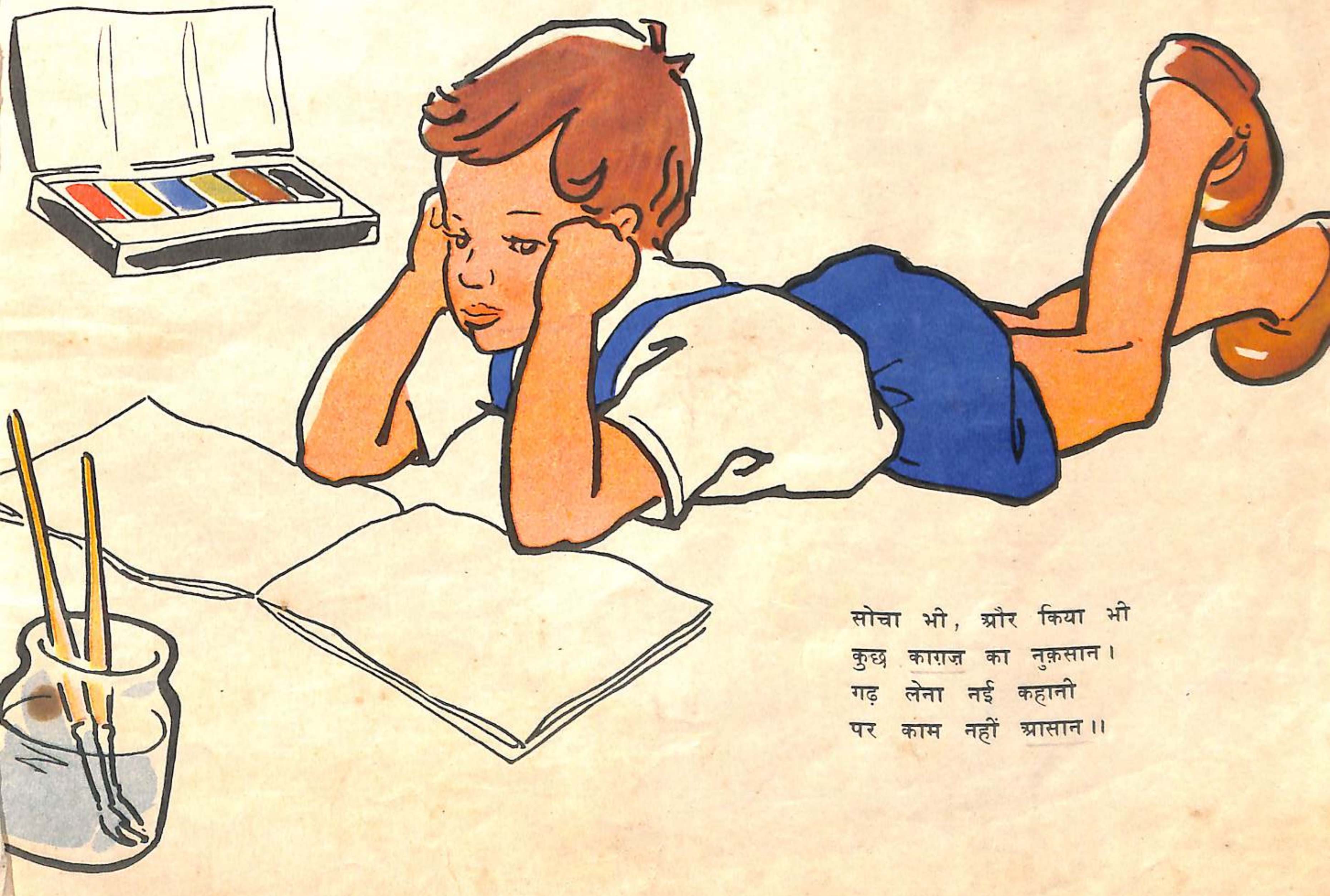

सोचा भी, और किया भी
कुछ काग़ज़ का नुक़सान।
गढ़ लेना नई कहानी
पर काम नहीं आसान॥

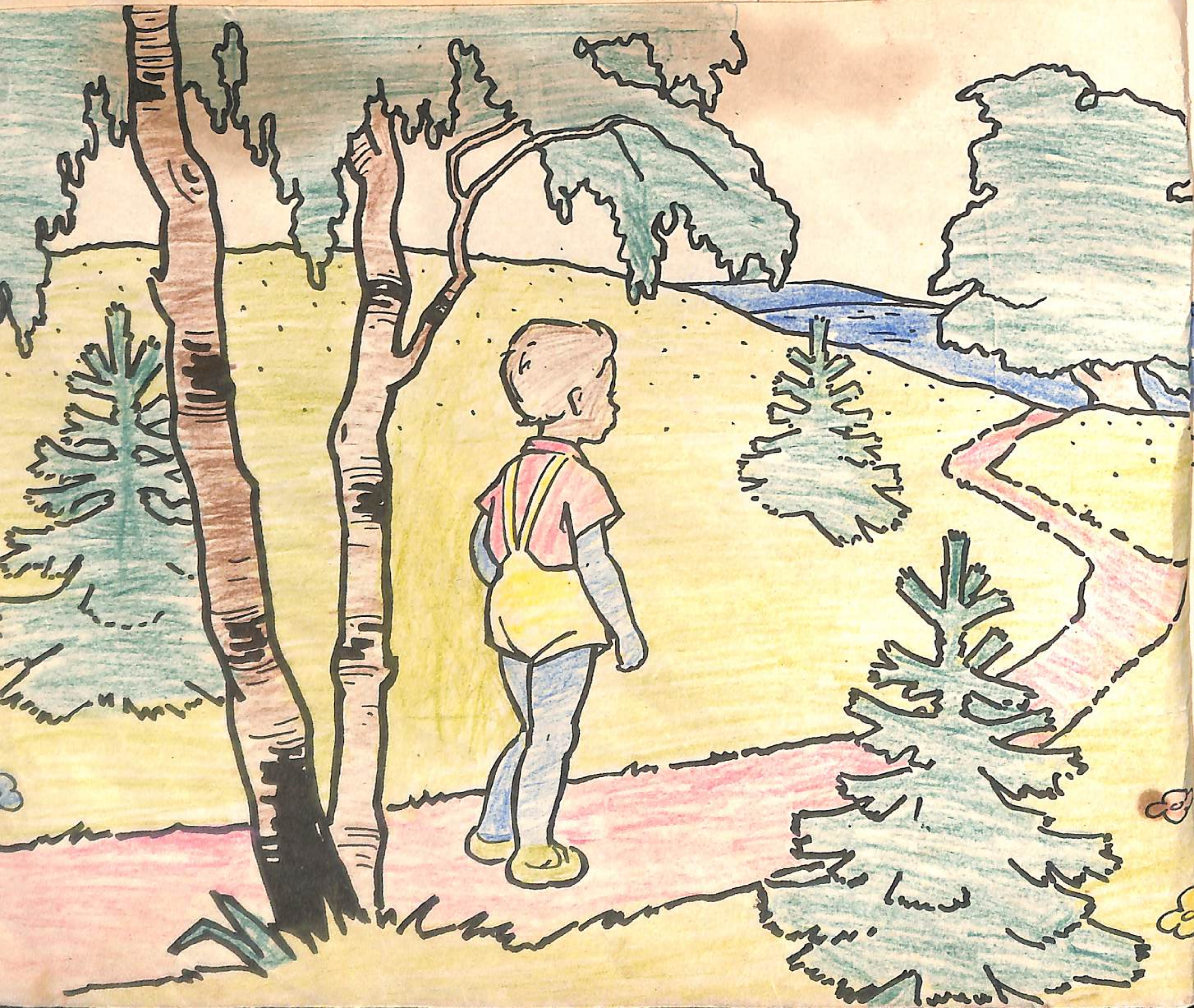

मैं गया घूमने बाहर
सन्ध्या तक बाहर घूमा
मैं लौट नहीं घर आया।
देखा चौड़े दरिया पर
पक्का पुल और टिकाऊ,
जाता किस तरह बनाया।।

उस जगह सलाखों के ऊपर
शहतीरों पर
कुन्दों पर
ठंडे जल की लहरों पर
बन रहा अजूबा सुन्दर।

निर्माण-कार्य था अद्‌भुत
सब इसमें हाथ बंटाते।
जोड़ाई करनेवाले
झालक भी ज़ोर लगाते ।।

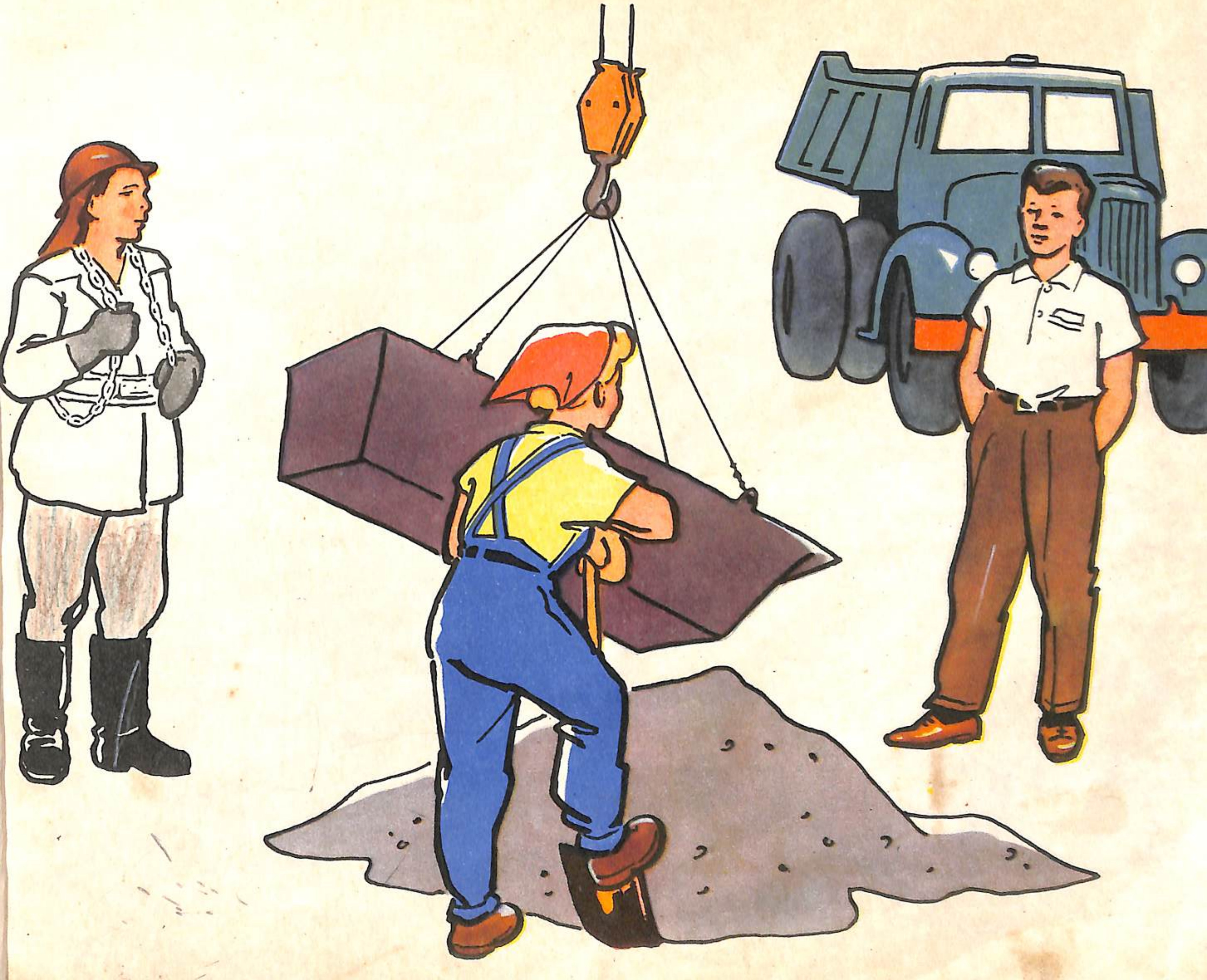

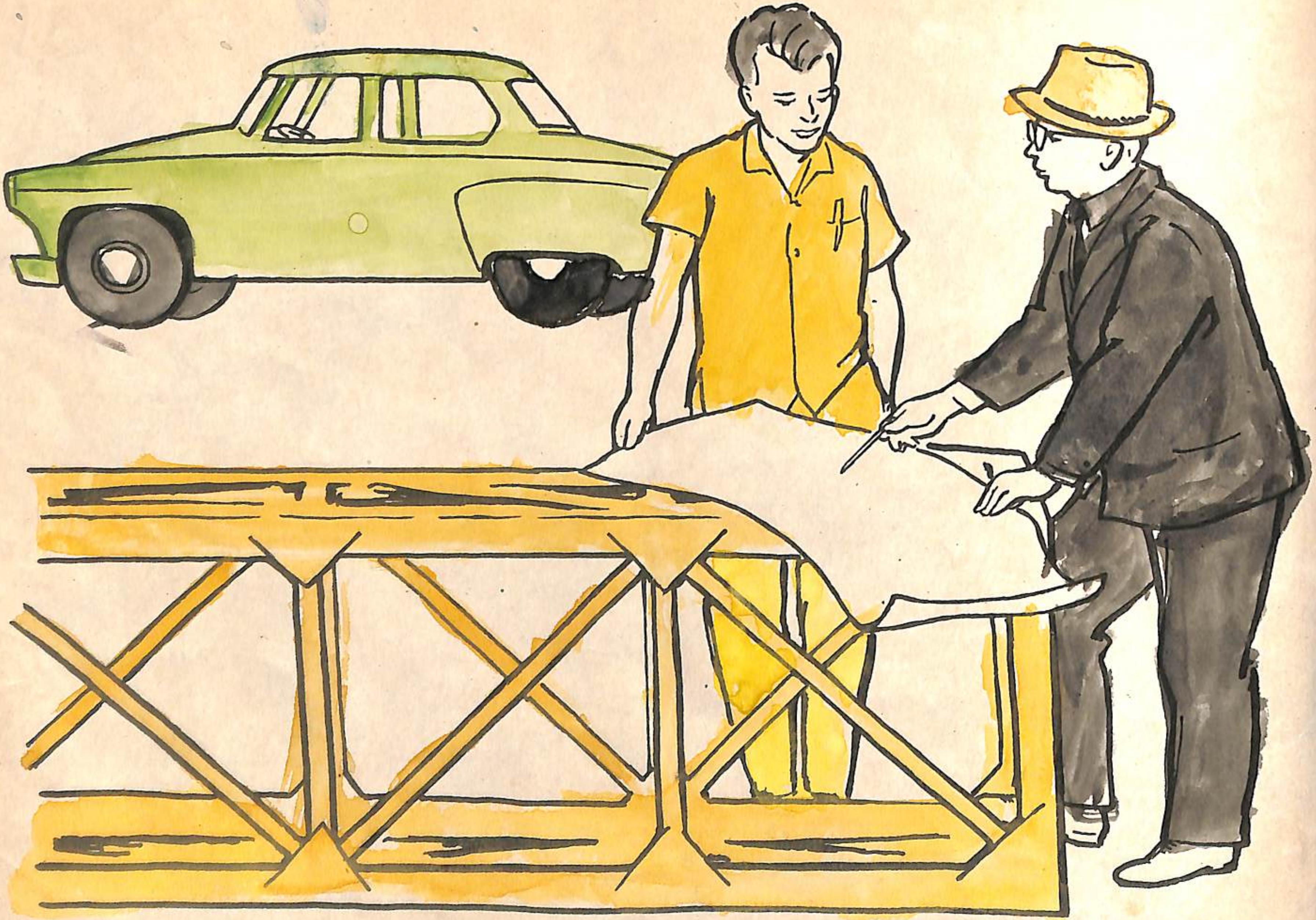

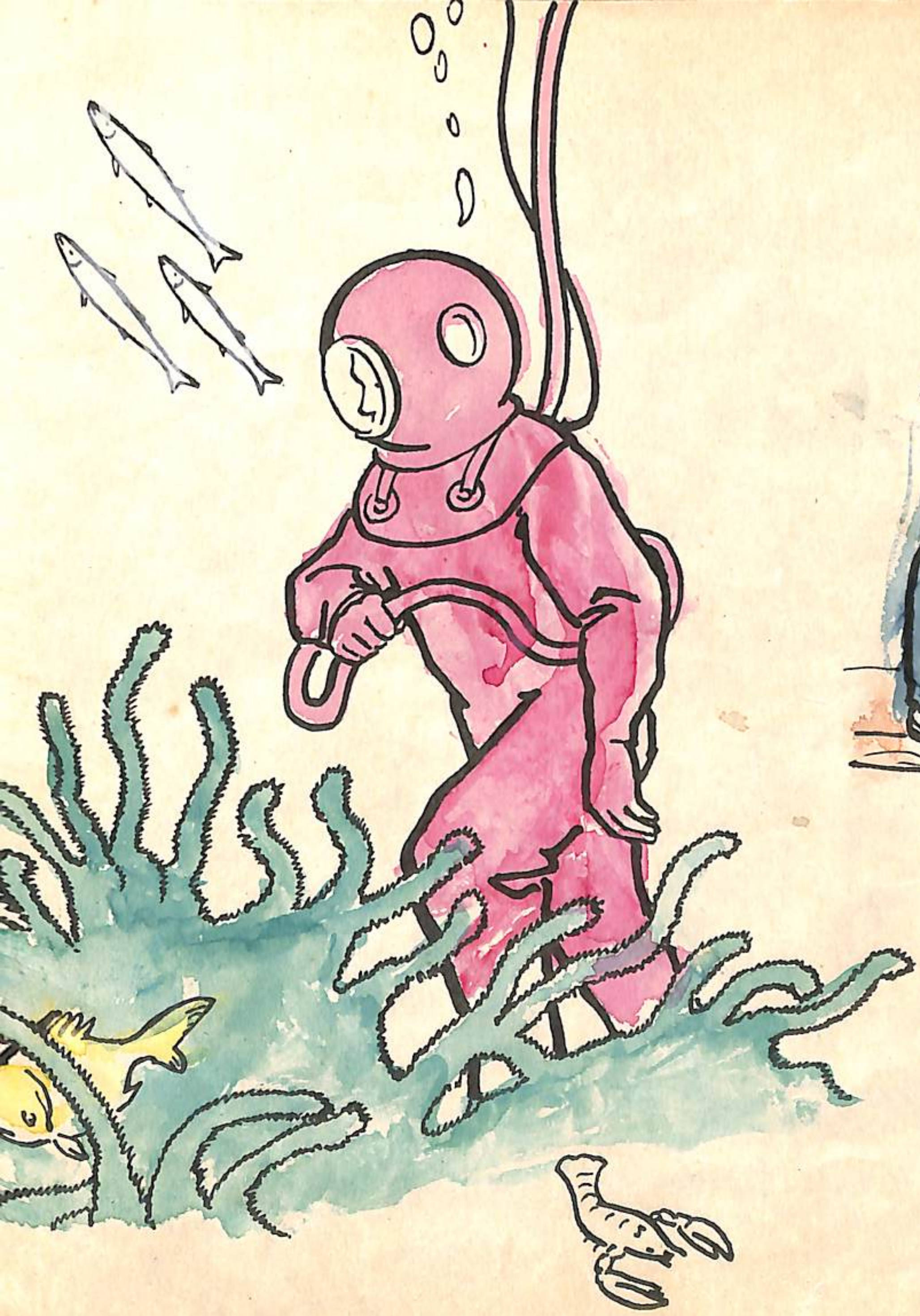

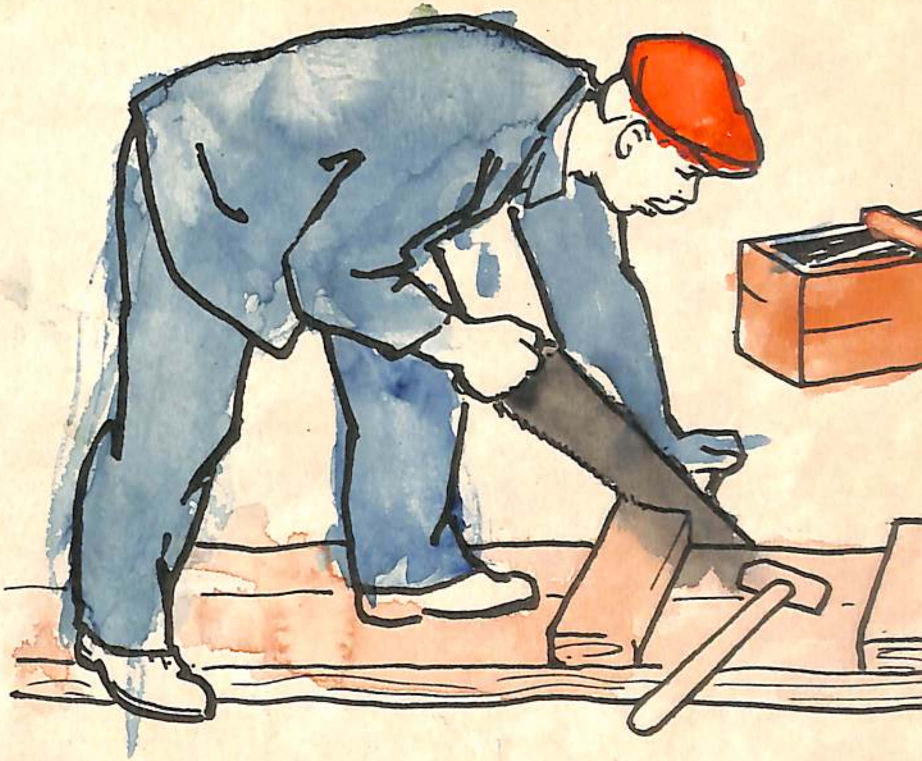

कंकरीट बिछानेवाला
और फिटर।
और मिस्त्री,
औ' ड्राइवर ।।

महाकाय हैं क्रेन वहां पर
जो चालक की बात मानते।
तट पर ट्रकें आती-जातीं
पहिये कब विश्राम जानते!

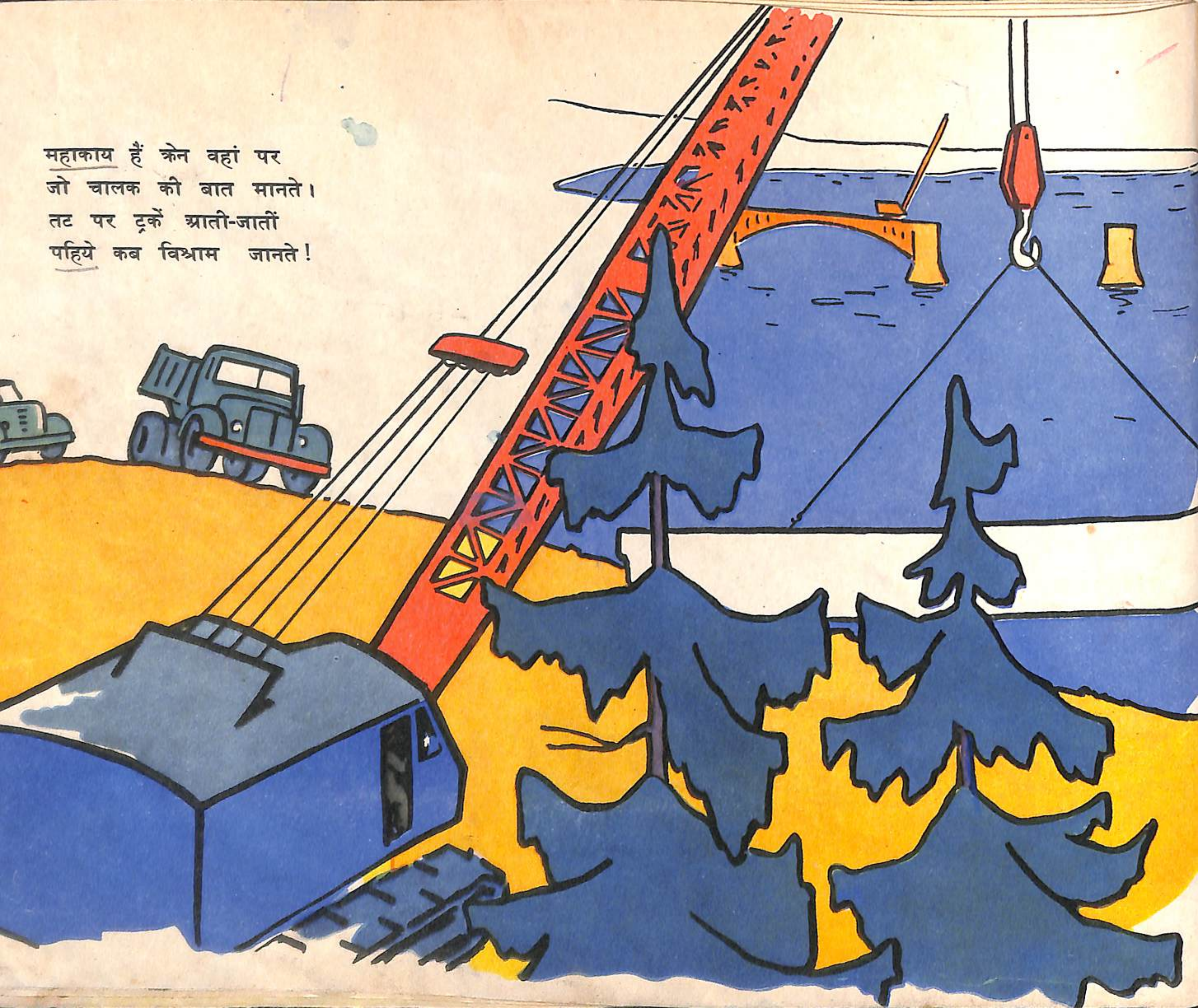

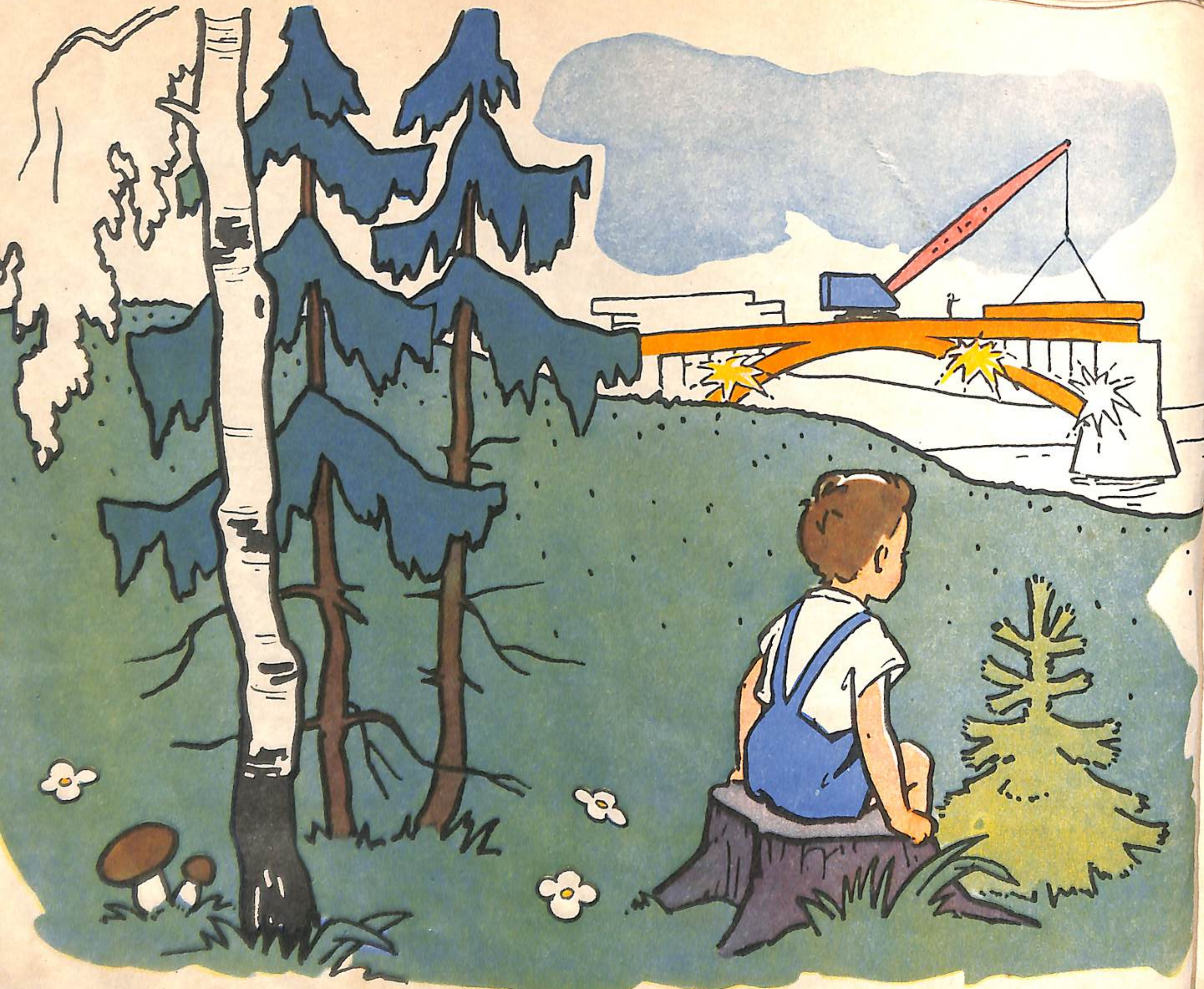

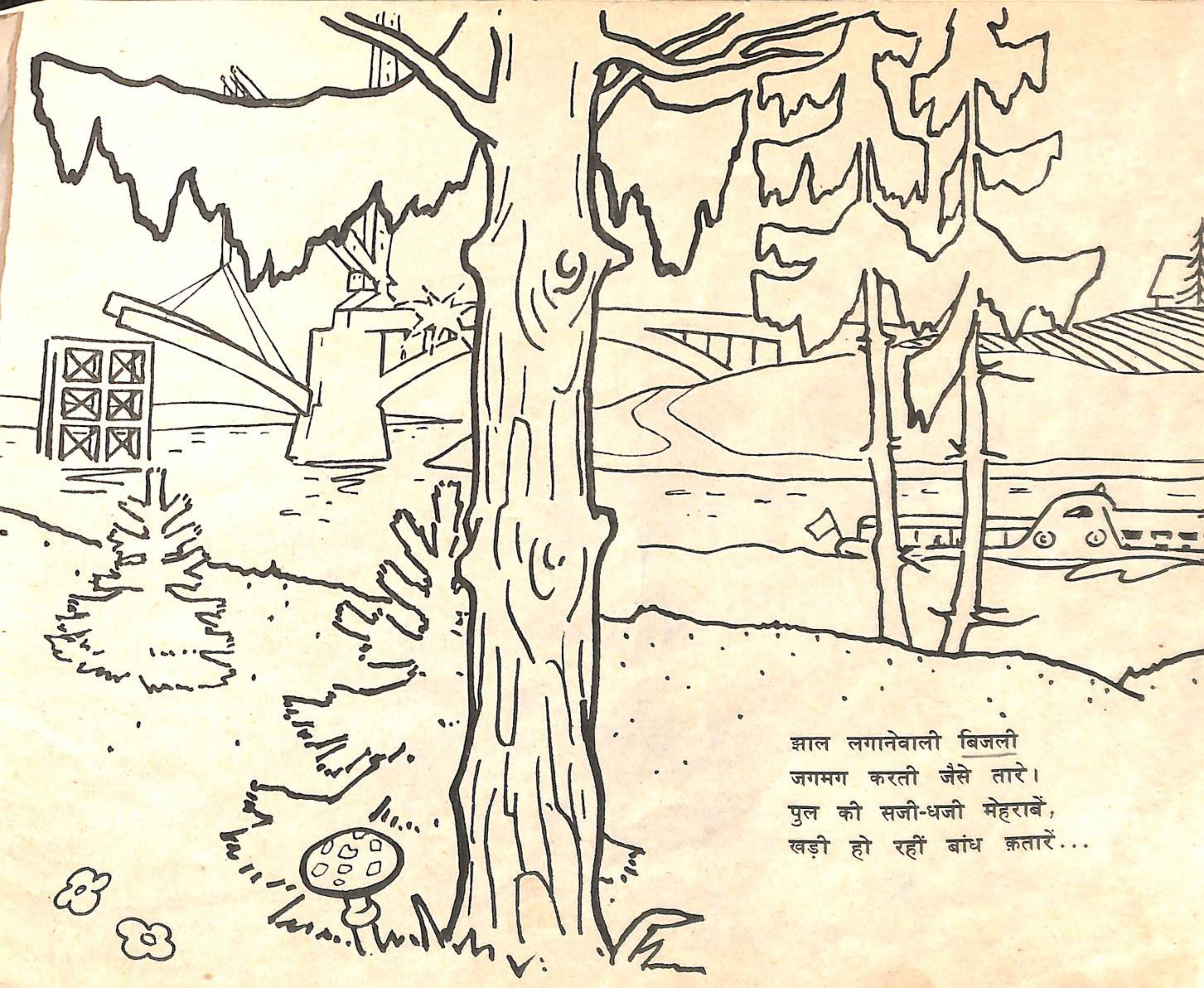

झाल लगानेवाली बिजली
जगमग करती जैसे तारे।
पुल की सजी-धजी मेहराबें,
खड़ी हो रहीं बांध क़तारें...

शीघ्र बहुत ही शीघ्र
यहां पर
बन जायेगा ढांचा सुन्दर।

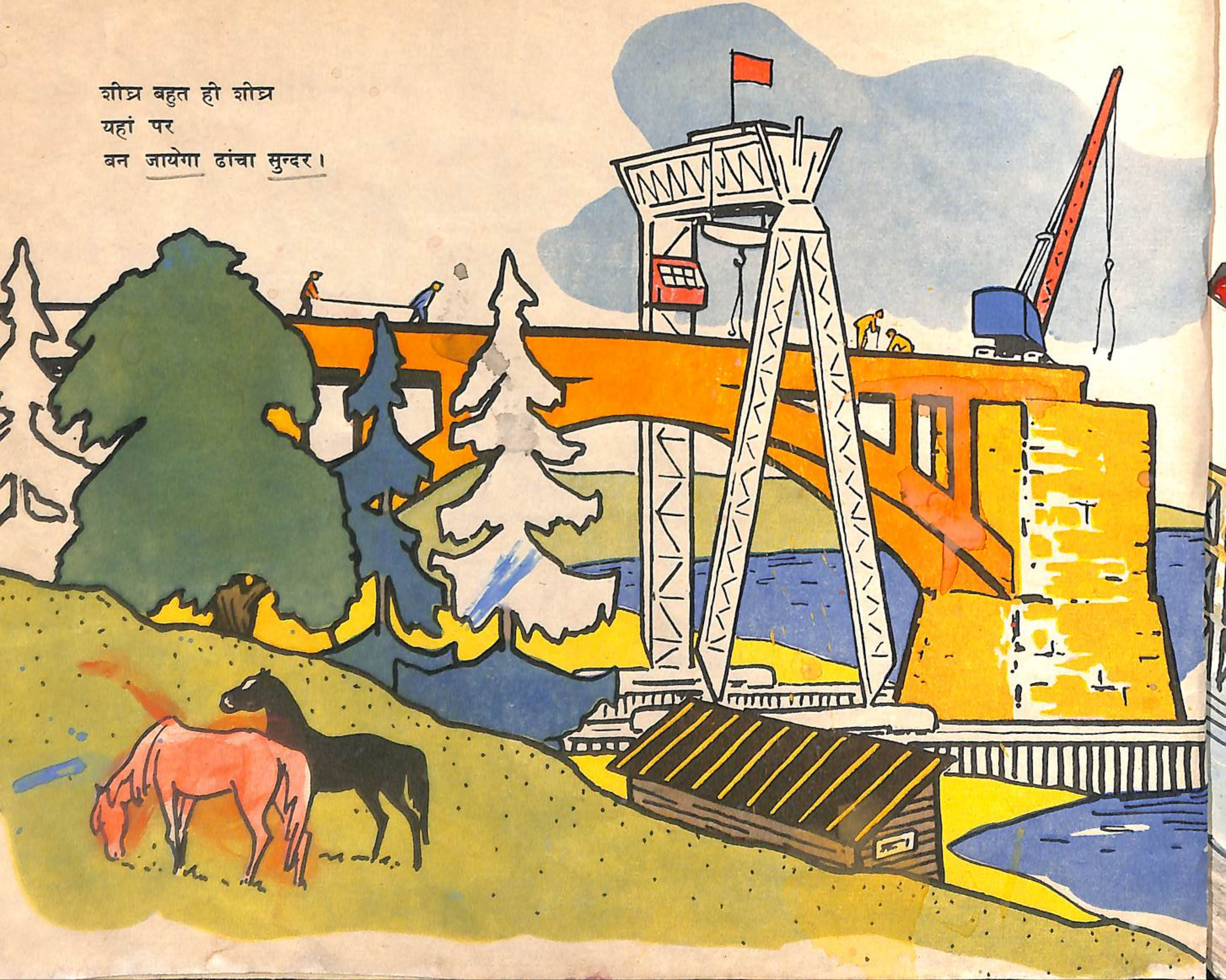

तट से तट तक
खड़ा यहां पर हो जायेगा
पुल भी बनकर।

गढ़ने की अब नहीं ज़रूरत
कोई नई कहानी।
जो देखा, उसकी ही मुझको
अब तसवीर बनानी।।
रंग चुनूंगा मैं चटकीले
कापी बढ़िया लाऊंगा।
नायक जो देखे आंखों से
उनके चित्र बनाऊंगा।।

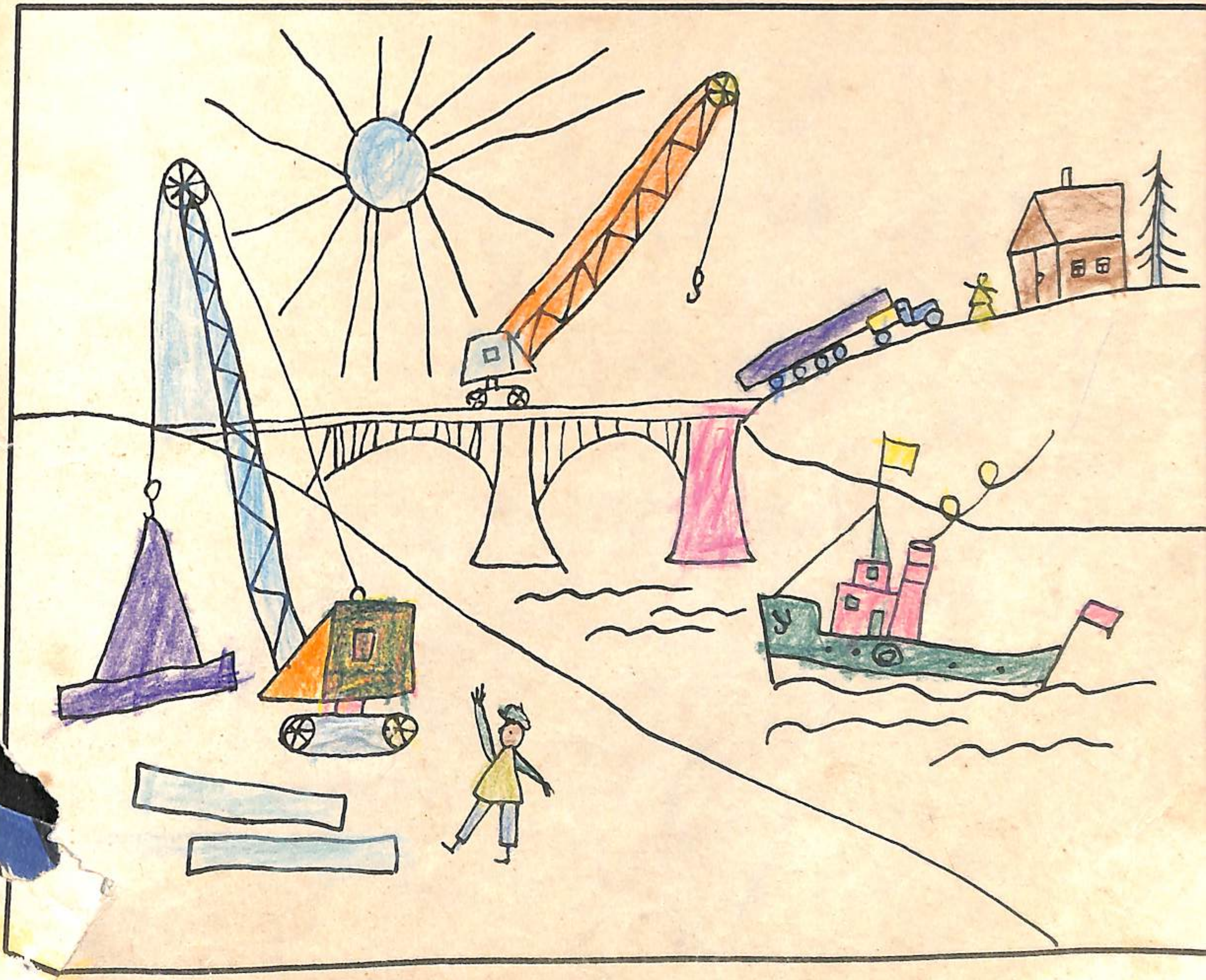

चित्रकार फ़० म्यास्निकोव